International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology
© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

मध्यकालीन सन्तकवियों की दृष्टि में सत्याचरण एंव सत्सङ्गति का महत्त्व

डॉ अनीता सिंह
पूर्व शोधच्छात्रा, हिन्दी विभाग, श्री गांधी पी0जी0 कालेज, मालटारी, आजमगढ, उत्तर प्रदेश।

भारतवर्ष में जब मुस्लिम आक्रांताओं का आक्रमण हुआ उस समय इस धरा पर दो संस्कृतियों और विचारधाराओं का मेल हुआ किंतु आरंभ में इन दोनों विचारधाराओं ,जिन्हें हिंदू और इस्लाम कहा जाता है, में परस्पर संघर्ष होता रहा। हिंदू जाति में अपरिवर्तनशील समझी जाने वाली जाति व्यवस्था को गहरा धक्का लग चुका था। हिंदू अपने धर्म की रक्षा के लिए प्रयत्नशील थे। उधर मुसलमान भारतीय समाज पर हावी होने के लिए तत्पर था इस प्रकार संपूर्ण वातावरण परस्पर संघर्षमय। हो गया था हिंदू एवं मुसलमानों में विद्वेष की भावना बढ़ती चली जा रही थी। वे एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे मानवता के लिए कोई स्थान नहीं रह गया था। मुस्लिम शासक तलवार के बल पर इस्लाम के प्रचारक और धर्म परिवर्तन पर बल दे रहे थे। उस समय जब की इस तरह जब अत्यंत अराजकता पूर्ण वातावरण भारतवर्ष में विद्यमान था। तब मध्यकालीन संतों ने अपनी अमृतमयी वाणी एवं रचनाओं के द्वारा हिंदू मुस्लिम विद्वेष को दूर करने का एक सफल प्रयत्न किया उन्होंने सामाजिक कुरीतियों का डटकर विरोध किया और बड़ी निर्भीकता से सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त बाह्य आडंबर और अंधविश्वासों तथा रुढियों का खंडन किया और सत्य के आचरण करने तथा सत्संगति पर विशेष बल दिया। कबीरदास ने सत्य पर बल देते हुए कहा कि यदि तुम्हारा मन सच्चा है और सत्य भावना से प्रेरित होकर ही समस्त कर्म किए हैं तो प्रभु को कर्म का हिसाब देने में आनंद आएगा इस सत्यता के कारण प्रभु के उस श्रेष्ठ दरबार में तुम्हारा कोई दामन नहीं पकड़ सकता।[1] कबीरदास कहते हैं कि यदि मानव का परिचय सत्य से हो जाता है तो उसमें अपने आप सत्य के प्रति घृणा तथा विरक्ति का भाव पैदा हो जाता है।[2] व्यक्ति का व्यवहार सत्य आचरण के अनुकूल हो जाता है। कबीर नें मन की शुद्धता पर भी बल दिया उन्होंने कहा कि मन जो किं चंचल है इसकी चंचलता से हटकर अध्यात्म की तरफ ध्यान देना चाहिए मन की शुद्धता से ही परम सहित अन्य की ओर चला चल सकते हैं।[3] उन्होंने कहा कि मनुष्य का विकास तभी संभव है जब वह मन से शुद्ध है। इसी मन के द्वारा मनुष्य गोरख के समान योगी हो सकता है तथा परम पद को प्राप्त कर सकता है यदि मन पर नियंत्रण रखकर सत्कर्म किया जाए तो वह स्वयं का स्रष्टा बन सकता है।[4] संत रविदास ने भी सत्य पर बल दिया और कहा कि सत्य ही सर्वस्व है सत्य ही केवल प्रभु है। सत्य के द्वारा ही सद्गति को प्राप्त किया जा सकता है उन्होंने बाह्य साधना जिसमें अंतर्मन की भक्ति सम्मिलित ना हो उसकी भर्त्सना की।[5] रविदास पूर्ण रूप से एक भावना प्रवण किंतु विवेकशील साधक एवं भक्त थे। कोई पूर्वाग्रह या प्रताड़ना उनको प्रतिक्रिया एवं प्रेरित

नहीं बना सकी। उन्होंने सदा ही विवेक के आधार पर ग्रहण तथा परित्याग को प्राथमिकता दी है।[6] तुलसीदास ने सत्य आचरण करते हुए सत्य पर विशेष बल दिया है और असत्य के समान कोई पाप नहीं है।[7]

धर्म न दूसर सत्य समाना।[8]

तुलसीदास में भगवान राम के मुख से यह कहलवाया है किं जो मन वचन और कर्म से मुझ में निष्कपट भक्ति करते हैं वह सब का सम्मान करते हैं पर स्वयं अपना सम्मान कराने से दूर भागते हैं ऐसे प्राणियों को मैं प्राण के समान प्यारा समझता हूं।[9] तुलसीदास का कहना है कि जो लोग मनुष्य शरीर पाकर भी अपना मन विषय भोग में लिप्त किए रहते हैं वह ऐसे मूर्ख हैं कि अमृत को छोड़कर विष पीने के पीछे पड़े रहते है ।[10] दादू का कहना था राम और रहीम दोनों एक ही है। पर हमें शरीर से नहीं आत्मा के द्वारा ब्रह्म का स्मरण करना चाहिए। उनके अनुसार राम का नाम मन के सभी विकारों का नाश करता है।[11] दादू की साधना सत्य पर आधारित थी। उन्होंने मूर्ति पूजा तथा कर्मकाण्ड का विरोध किया ।[12] इस प्रकार दादू के मतानुसार सत्कर्म के मार्ग पर चलकर मनुष्य मोक्ष प्राप्त करने में सफल हो सकता है तथा परम परम तत्व को प्राप्त कर सकता है।

मध्यकालीन संतों ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए बताया कि मनुष्य के लिए सत्य संगति आवश्यक होती है सत्संग के बिना मनुष्य सत्कर्म को नहीं कर सकता सत्संग ही मनुष्य को कुमार्ग सें सुमार्ग को ले जाता है। वही मनुष्य को सदाचारी बनाता है। इसलिए संतों से सत्संगति पर विशेष बल दिया है। कबीर दास की दृष्टि मैं साधु की संगति और भगवत भक्ति के बिना कुछ भी सिद्ध होने वाला नहीं है। उन्होंने कुसंग की निंदा और कपट का विरोध किया है उनके अनुसार मनुष्य को मूर्खों का संघ कभी नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार लोहा पानी में डूब जाता है उसी प्रकार मूर्खों के साथ रहकर मनुष्य भवसागर में डूब जाएगा। मनुष्य जिस प्रकार की संगति में बैठेगा उसकी बुद्धि उसी प्रकार हो जाएगी अतः मनुष्य को सदैव अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए और भगवान का ध्यान करना चाहिए।[13] कबीर दास का कहना है कि जिन मनुष्य के मुख पर कुछ तथा ह्रदय में कुछ होता है वह कपटी होते हैं अतः ऐसे मनुष्य का साथ स्वप्न में भी नहीं करना चाहिए।[14] कबीर उस दिन को भला दिन मानते थे जिस दिन संत मिले थे सत्संगति का अवसर प्राप्त हो सत्संगति से सारे शारीरिक विकार दूर होते हैं ।[15] जो मनुष्य सत्संग नहीं करता है वह जीवन में अनेक दुख भोगता है।[16] कबीर दास जी सत्संगति पर बल देते हुए कहते हैं कि साधुओं की संगति कभी निष्फल नहीं जाती और उनकी संगति में बैठने पर फिर किसी प्रकार का दोष लगने का डर नहीं रहता है क्योंकि चंदन के वृक्ष को कोई भी नीम के समान कड़वा नहीं बना सकता।[17] साधु जनों की संगति के दुर्बुद्धि का नाश और सद्बुद्धि की प्राप्ति होती है ।[18]

रैदास का विचार है कि सत्संगति के बिना प्रेम भाव उदय नहीं हो सकता है कि वे उस व्यक्ति को जानते हैं जिससे प्राणनाथ मिलते हैं परंतु वह भक्ति भी मिला मिल पाती है साधु संगति से ही।[19] रैदास तो ऐसे

अतिथि देव के आगमन पर सुख का अनुभव करते हैं वह दिन धन्य है जब राम का प्यारा घर आकर आंगन बंगला भवन को पावन बना देता है ऐसे पूज्य अतिथि का पद प्रक्षालन तक करते हैं क्योंकि वह हरि कथा कहता है अर्थ विचार करता है स्वयं मोक्ष को प्राप्त करता है और इतर जनों को भी मुक्ति दिलाता है।[20]

रविदास ने संत और ब्रह्म में कोई भेद नहीं माना है उनका कहना है कि जिस भक्तों के भीतर भगवान का निरंतर निवास है वह स्वयं भगवान स्वरूप है। उस पर लौकिक क्रियाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात काम क्रोध का कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।[21] संत रविदास साधु संगति को बहुत महत्व देते हैं उनका कहना है कि यदि तुमने साधु संगति में रहकर राम का यश गान नहीं किया तो तुम्हारा यह सारा जीवन निरर्थक हो गया जिसकूल में वैष्णव साधु जन्म लेता है। वह कुल जगत का सर्वाधिक विमल स्थान है। कहीं–कहीं रैदास का साधु महिमा विषयक वर्णन कबीर से भी अधिक रस और सजीव दिख पड़ता है। दोनों ही संतों की रचनाओं में साधु के विशद स्वरूप का चित्रांकन देखने को मिलता है जो इनकी साधु सेवा विषयक निष्ठा का परिचायक है सत्संग और भक्ति का धनिष्ठ संबंध है दोनों भव – ताप आपका समन करने वाले हैं सत्संग मंगल का मूल है यदि अन्य साधन फूल के समान है तो सत्संग उनका सिद्ध फल है।[22] इसी प्रकार तुलसीदास ने भी सत्संगति के महत्व पर प्रकाश डाला है उन्होंने लिखा है कि

सठ सुधहि सत संगत पाई ।

नानक के अनुसार भक्ति भावना को जागृत करने के लिए सत्संग तथा साधु संग आवश्यक हैं साधु में से किसी एक गुरु का चयन करना चाहिए गुरु द्वारा निरूपित कर्मयोग, योगमार्ग तथा ज्ञान मार्ग में सत्संग पर अधिक बल दिया गया है भक्ति मार्ग का यही सर्वस्व है प्रत्येक सिक्ख नित्य परमात्मा से मांग करता है साधु संघ गुरुमुख दा मेल अर्थात साधु का संग और गुरु मुख का मेल श्री गुरु ग्रंथ साहब ने भी लिखा मिलता है

करहु कृपा करू जायते तेरे हरि गुण गाउ।
नानक की प्रभु बेनती साधु संग समाउ ।।

तुलसीदास ने कुसंगति की निंदा करते हुए कहा है कि कुसंगति से कौन ऐसा है जो नष्ट नहीं होता है।[23] कुसंगति से व्यक्ति का चारित्रिक पतन हो जाता है। उनका कहना है कि सत्संगति से व्यक्ति का मन निर्मल होता है। वही कुसंगति व्यक्ति के व्यक्तित्व को नष्ट कर डालती है और पतन की राह ले जाती है सत्संग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए तुलसीदास ने कहा कि सत्संग बड़े भाग्य फल है और उससे सारे दुख दूर हो जाते हैं ।[24]

सत्संग की महिमा की प्रशंसा करते हुए तुलसीदास ने कहा है कि सत्संग से अनंत सुख का अनुभव होता है वहीं इससे मानव दुखों का अंत होता। सात भोग स्वर्ग अपवर्ग सुख भी सत्संग के सुख के आगे कुछ नहीं है।[25] सत्संग ही सभी सुखों का मूल है तथा समस्त साधनों का सुंदर फल है और सत्संग के द्वारा ही हम अपने

आराध्य को पा सकते हैं। उन्होंने आगे कहा है कि सत्संगति का एक क्षण भी प्राप्त हो जाना हमारे इस संसार के लिए दुर्लभ है।[26] सत्संग से जो हरि कथा चलती है वह ज्ञान की जनक है और मोह को दूर करती है। माया मनुष्य को सांसारिक कार्यों में फंसा रहती है।[27] यह वैराग्य के विपरीत भाव को प्रकट करती है।[28] सत्संग से परम पिता हरि के दर्शन प्राप्त होते रहते हैं संतों की कृपा होने पर राम भी बिना प्रयास ही मिलते हैं तुलसीदास ने यहां तक कह दिया कि बिना सत्संग के भक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती है।[29]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कबीर ग्रंथावली सांच को अंग पद 2 प्रश्न 33
2. वही पद 16 प्रश्न 34
3. वही का अंग पद 1 प्रश्न 2
4. वही पद 10 प्रश्न 22
5. वही साखी 2
6. योगेंद्र सिंह : संत राय दास पद 33
7. रामचरितमानस अयोध्या कांड दो 27 पद 5
8. वही दो 95 पद 3
9. वही 38, 2
10. वही 44
11. संतवाणी सं0भाग 10पृ0 184 दाद की वाणी भाग 1 पृ0 19 ।
12. दाद की वाणी भाग 2 पृ0 83
13. कबीर ग्रंथावली कुसंगति को अंग पद दो 5 पृ0–37
14. वही चटपटी को अंग पद 1पृ0 51
15. वही पद 6 पृ0 39
16. वही पद 90 पृ 90
17. वही के साथ को अंग पद 1 पृ 038
18. वही पद 2 पृ 0 38
19. सन्त रविदास और उनका काव्य पद 76
20. वही पद 77
21. वही पद 66
22. वही साखी 3, रामचरितमानस बाल काण्ड 8,
23. वही आयोध्या कांड़, 24, 4,
24. वही उत्तर कांड़, 24, 4
25. वही सुन्दर कांड़ दो0– 4
26. वही उत्तर कांड़, 123, 3
27. वही 116, 1, 2
28. विनय पत्रिका, दो, 203 पृ0–468
29. वही दो0 136, पृ0–439,